

23 सीखने की नई ऋतु

यामिनी झा

यदि हम समग्र शिक्षा में आस्था रखने वाले शिक्षकों की तरह कक्षा में जाते हैं, तो हम जानते हैं कि सार्थक शिक्षा एक प्रकार का समवेत संगीत (सिम्फनी) है जो मस्तिष्क, हृदय तथा हाथ–पैरों के समन्वित विकास से उत्पन्न होता है। शिक्षान्तर स्कूल में हम बच्चों के लिए सीखने का उल्लासमय वातावरण निर्मित करने में और अपने पाठ्यक्रम को समूह की आवश्यकता के अनुसार विकसित करने में विश्वास करते हैं। पिछले वर्ष मेरा समूह एक उल्लेखनीय रूप से बुद्धिमान तथा विचारवान समूह था। सात वर्ष की आयु वाले वे अधिकांश बच्चे ऐसी गतिविधियों में आनन्द लेते हुए प्रतीत होते थे जिनके लिए विश्वकोशों में से तथ्यों की खोज करने की आवश्यकता होती थी। वे भोजनावकाश के समय एक–दूसरे से प्रश्न पूछने के खेल खेलते, पहेलियाँ बनाने में मजा लेते, करीब–करीब हर चीज पर अपनी राय साझा करते और विज्ञान में परिकल्पनाएँ बनाने की कोशिश करते दिखते थे। वह एक ऐसी कक्षा लगती थी जिसका हिस्सा कोई भी शिक्षक बनना पसन्द करता।

चूँकि अधिकांश बच्चे अपनी संज्ञानात्मक या सोचने की क्षमताओं में सशक्त थे, इसलिए हमारा काम ऐसे अन्य क्षेत्र खोजना था जिनके विकास करने की आवश्यकता होगी। मुझे यह बात विशेष रूप से गौर करने लायक लगी कि प्रकाश तथा रंगों की खोजबीन के विज्ञान के एक अध्ययन–प्रसंग में, अधिकांश ऐसी गतिविधियों में बच्चों को आनन्द आया जिनका सम्बन्ध तथ्यों की जानकारी हासिल करने से था, उदाहरण के लिए इन्द्रधनुष कैसे बनते हैं, प्रकाश की गति 300,00 कि.मी. प्रति सैकेण्ड है आदि। उस उम्र में हमें जिस चीज की जरूरत थी, वह थी बस अपने आसपास के प्रकाश और रंगों को सराहना, इसकी खोजबीन करना कि धूप हमें कैसे प्रभावित करती है, वह हमें कैसा महसूस करवाती है, कैसे वह हमारे आसपास की भूमि पर परिवर्तन लाती है, कैसे वह हमारे आसपास के संसार में रंगों को परिवर्तित करती है आदि। हम अपने स्वयं के ढंग से केवल तभी "सोच सकते" हैं और खोज को सम्भव बना सकते हैं, जब जो हम "करते" हैं उसे हम "अनुभव" भी करें।

सोचने के क्षेत्र का अनुभव और करने के क्षेत्रों से पूर्ण एकीकरण (जिसके बारे में हम अक्सर दार्शनिक ढंग से सैद्धान्तिक बातें करते हैं) कर पाने की क्षमता का मेरे लिए अपनी कक्षा के कार्य में समावेश कर सकना तब सम्भव हुआ जब एक सहकर्मी, श्रीमती अमीता शेट्टी कपूर, के माध्यम से मेरा परिचय शिक्षा में डाक्टर रूडोल्फ के दृष्टिकोण से हुआ। ऐसे एकीकरण का एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

जब शीत ऋतु आने लगी तो हमने आसपास के संसार से एक विषयसूत्र को लेकर एकीकरण करने का प्रयास किया। विषयसूत्र के रूप में हमने शीत ऋतु की जाँच–पड़ताल की। शुरुआत हमने यह देखने से की कि किस बात से हमें एहसास होता है कि शीत ऋतु आ गई है। सर्किल टाइम में होने वाली "ऋतु परिवर्तन" की चर्चाओं में उन प्रोजैक्ट्स के लिए, जिनकी योजना हमने आने वाले ठण्ड के दो महीनों के लिए बनाई हुई थी, बहुत आवश्यक दिशाएँ निकलकर सामने आईं। "तापमान परिवर्तन" की चर्चा से ध्यान वस्त्रों तथा धागों पर गया। जिसमें हमने विभिन्न बुनावटों वाले कपड़ों को छूकर महसूस किया और हम बुनने की क्रिया के प्रथम चरणों को कक्षा में लेकर आए। गाँठ लगाना सीखा गया, जूते पहनने में यह सीख जुड़ गई कि अपने जूतों के फीते कैसे बाँधते हैं। यह गतिविधि जूतों के फ्लेप के काटे गए नमूनों (कट आउट) को बनाकर सीखी गई। फ्लेप में

बाकायदा छेद किए गए और बच्चों ने चरणबद्ध ढंग से उन छेदों फीते डालकर बाँधना सीखा।

इसके बाद ऊन की बुनाई करने में उनकी उँगलियाँ चलाने की कुशलता को चुनौती मिली। हमने इस प्रोजैक्ट को एक कहानी के रूप में बच्चों के सामने प्रदर्शित किया। इस कहानी को यहाँ दोहराया जा सकता है क्योंकि इसका क्रम उँगलियों से बुनाई करने के क्रम को निरूपित करता है। किसी जगह एक छोटा तालाब था (यहाँ हम ऊन से



एक फन्दा बनाते हैं, जिसमें दाहिनी तरफ का धागा ऊपर आता है), एक किंगफिशर को भूख लगी और उसने पानी में गोता मारा (यहाँ हम दिखा सकते हैं कि हम कैसे फन्दे के अन्दर उँगली डालते हैं) और पानी में से खाने के लिए एक मछली निकाल लाया (धागे को फन्दे में से खींचना)। तालाब फिर से शान्त हो गया (फन्दा फिर से उसी आकार का हो गया)। अलग–अलग बच्चे इसे भिन्न–भिन्न स्तरों की कुशलता से कर सके; महत्वपूर्ण बात उनका प्रयास करना और उस अभ्यास को जारी रखना था। इसलिए इसे एक ऐसी गतिविधि बना दिया गया जिसे बच्चे अपने खाली समय में कक्षा में कर सकते थे। यदि वे अपना काम समय से पहले कर लेते थे तो यह गतिविधि उन्हें व्यस्त रखती थी। जिन लोगों ने उसमें निपुणता हासिल कर ली थी उन्हें भी सलाइयों से बुनाई करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। हालाँकि इसमें सहायक की भूमिका निभाने वाले व्यक्ति के सामने बहुत–सी सामग्री की व्यवस्था करने, गतिविधि का



प्रदर्शन करने के कौशलों के अलावा अत्यन्त धैर्य बनाए रखने की चुनौती होती है। बच्चे कदम–कदम पर अटक जाते हैं और प्रत्येक की उसके स्तर पर व्यक्तिगत रूप से मदद करना पड़ती है। पर यह मेहनत तब सार्थक हो जाती है जब आप देखते हैं कि बच्चों ने कितने कौशल सीख लिए हैं। मैं इस गतिविधि में अकेली ही सहायक का काम कर रही थी। लेकिन यदि यह गतिविधि पहली बार की जा रही हो तो हाथ के काम में मदद करने के लिए एक और व्यक्ति का होना निश्चित ही उपयोगी होगा।

इसके बाद, 'भोजन' के विषय का अन्वेषण किया गया जिसमें मैथी की चपाती बनाने जैसे प्रोजैक्ट्स को प्रारम्भ से अन्त तक किया गया। एक इकट्ठे समूह की तरह बच्चों ने मैथी काटना, मसाले डालना, आटा गूँथना सीखा। जब 26 बच्चे बारी–बारी से उसी आटे को गूँथते हैं तो आटा वाकई में बहुत बढ़िया मड़ जाता है। फिर उन्हें हर मेज पर मड़े हुए आटे की छोटी–छोटी लोइयाँ दी गईं जिनको उन्होंने अपनी पसन्द के अनुसार चपाती के रूप में बेलने की कोशिश की। वे अपनी–अपनी चपाती रसोईघर में ले गए। जिन्हें खुद के ऊपर भरोसा था उन्होंने सहायक के निरीक्षण में उसे पकाया भी।

'ऋतु' के विषयसूत्र के अन्वेषण को तब एक दूसरे आयाम में ले जाया गया जब अगले प्रसंग – 'शिक्षान्तर में पेड़/पौधे' – में मनुष्य से हटकर प्रकृति हमारे ध्यान का केन्द्र हो गई। प्रोजैक्ट के पहले दिन की खास बात स्कूल में

लगाए गए पहले पेड़ को देखने जाना था। तब हमें मालूम हुआ कि क्यों वटवृक्ष को स्कूल के प्रतीक चिन्ह की तरह चुना गया था। यह हम सबके लिए स्कूल में अपनी जड़ों को खोजने जैसा था, जिसके चलते हर बच्चे ने बरगद के पेड़ पर लगी एक पत्ती के चित्र के रूप में अपनी भावनाओं को दर्शाया और उस माह के लिए कक्षा के एक वृक्ष की रचना की। अगले दिन हर बच्चे का अपना–अपना एक पेड़/पौधा था जिसे उन्होंने अपनी प्रकृति की सैर के बाद चुना था। पूरे सप्ताह भर वे उस पेड़ के पास थे – उसको छूकर महसूस करते हुए, उसका चित्र बनाते हुए, पत्तियों की छापें लेते हुए, छाल की छापें लेते, इस तरह के तथ्यों की पड़ताल करते हुए कि एक पूरे साल के दौरान, फलों, फूलों, बीजों, आयु के अनुसार ऊँचाई (कितनी मंजिलें, सीढ़ियाँ, फैली हथेली के विस्तार की माप, आदि) की दृष्टि से पेड़ किन परिवर्तनों से गुजरा।

अधिकांश शोध का मार्गदर्शन बगीचे की देखरेख करने वाले माली भैया ने किया। यह ऐसा विषय था जिसमें सहायक के रूप में प्रबन्धन करने की कम से कम जरूरत थी। हर बच्चा स्कूल के अलग–अलग कोनों में किसी ताड़ के पेड़, या आम के पेड़ या बाँस के झाड़ या तुलसी के पौधे आदि के पास जमा हुआ था। उनमें इसको लेकर इतना उत्साह था कि वे कक्षा में अपना काम समय से पहले पूरा कर लेते ताकि वे अपने पेड़ के बारे में किसी नई बात की खोज कर सकें। वे इसमें ऐसे तल्लीन हो जाते कि एक–दूसरे से बात करना भी भूल जाते भले ही वे पेड़ के नीचे बगल में ही बैठे हों। अन्त में, प्रकृति के साथ इस जुड़ाव के परिणामस्वरूप एक सुन्दर पुस्तिका निकल कर आई, जो अनोखी थी क्योंकि उसमें हर बच्चे के अपने विचार थे – कोई कहानी या हृदय से महसूस की गई कविता, हाथ/पैर से नापे गए तथ्य आदि। हर चित्र भी उस रिश्ते को निरूपित करता था जो उसे बनाने वाले बच्चे ने अपने पेड़ से जोड़ा था। बाँसों का झुरमुट हाथों वाले एक ऐसे पौधे जैसा दिखाई दे सकता था जो हाथ बढ़ाकर आकाश को छूने की कोशिश कर रहा हो। एक आम का वृक्ष हमें ऐसा एहसास करा सकता था कि उसे अपने को बर्फ से बचाने के लिए नुकीली पत्तियाँ रखने की जरूरत थी। यह पूरी तरह से कार्य रूप में 'करके सीखना' था।

'ऋतु' के विषयसूत्र की यह यात्रा आगे भी जारी रही जब ये वृक्ष हमारे पंछियों के घरों में बदल गए। एक पक्षी अभयारण्य(जो प्रवासी पक्षियों का निवासस्थल है) के भ्रमण–दौरे के परिणामस्वरूप 'ऋतु' का सम्पूर्णता से एकीकरण हो गया। बच्चों ने, समूहों में अवलोकन किए और पक्षियों के तीन अलग–अलग आवास–स्थलों की रचना की, जिनका निर्माण कागज की लुगदी से किया गया था। किंगफिशर पक्षियों की सुरंग कक्षा के बगल में रेत के क्षेत्र में बनी काल्पनिक झील में खोद कर बनाई गई। हमने बाँसों के ऊँचे झुरमुटों में एक घोंसले के साथ छिपे हुए एक मोर को भी ढूँढ़ निकाला। छोटी–छोटी जानकारियों के विस्तृत विवरण हम वयस्कों को भी समृद्ध बनाते रहे, क्योंकि उनसे यह साफ जाहिर होता था कि बच्चों ने कितने ध्यान से पक्षियों का अवलोकन किया था।

इन सभी विषय–प्रसंगों (थीम्स) में कुछ आवश्यक मूल तत्व थे –बच्चों की आयु के लिए विषयवस्तु का उपयुक्त होना; सर्किल टाइम के दौरान दिन के कार्य की दिशा तय होना; एक कोने में ब्लैकबोर्ड पर बनाए गए चित्र जो विषय–प्रसंग पर शिक्षक की दृष्टि को दर्शाते थे और जो प्रतिदिन बदल जाते थे; कविताएँ, कभी हाव–भाव पूर्ण अंग–संचालन के साथ और कभी उसके बिना; संवेदनशील क्षेत्रों को उभारने वाली कहानियाँ; विषय–प्रसंगों के पूरा होने को निरूपित करने के लिए मानसिक–मानचित्रण।

कक्षा में गायन, काव्य, कला आदि का भरपूर समावेश होता था। तीन माह की समाप्ति के बाद हमने जो विशेषता देखी, वह थी बच्चों का काव्य, संगीत तथा कला के प्रति प्रेम। यहाँ तक कि शब्दों की सूची बनाने में भी बच्चे जो शब्द या वाक्य लिखते थे उसके सामने कोई चित्र बना होता था, क्योंकि उन्होंने वह सब चुपचाप आत्मसात कर लिया था और गहराई से अनुभव किया था।

बच्चों को अधिक सीखने और रचनात्मक होने की जरूरत होती है, लेकिन उसके पहले हम शिक्षकों को रचनात्मक

होने की आवश्यकता है। हम सभी को विषय को महसूस करने की, फिर विचार में उसकी रचना करने की और क्रिया में उसका प्रदर्शन करने की आवश्यकता होती है।

शिक्षकों की तरह हमें वाकई में अधिक से अधिक सीखने की जरूरत होती है और यह केवल पुस्तकों से नहीं होना चाहिए। हमें जरूरत होती है एक अन्तर्यात्रा की, जहाँ हम पीछे हट जाएँ, अपने जीवन में बच्चों– जैसे विस्मय को शामिल करें, फिर से प्रकृति का और अपने आसपास के संसार का अवलोकन करें,चीजों को प्राकृतिक रूप से अनुभव करें तथा क्रियान्वित करें। इससे हमारा काम सहज ही सटीक ढंग से होने लगता है और बच्चे को सीखने में सराबोर कर देता है। यही एकमात्र तरीका हमारी दृष्टि में बदलाव लाता है, हमें जागरूक बनाता है तथा शिक्षक की तरह तैयार करता है।



__यामिनी__ शिक्षा के क्षेत्र में पिछले 12 वर्षों से काम कर रही हैं। वे समग्र शिक्षा के क्षेत्र में आत्म–निर्देशित सीखने वाली और खोजी हैं। उन्हें वाल्डोर्फ ऐजुकेशन एण्ड ऐंथ्रोपॉलॉजी से प्रेरणा मिली है। उन्होंने 5 वर्ष ऐजुकैम्प के साथ काम किया है जहाँ वे इंटैल के 'टैक्नॉलॉजी इन ऐजुकेशन प्रोजैक्ट' का तथा दिल्ली में विप्रो ऐप्लाइंग थॉट इन स्कूल्स के 'क्वालिटी इन ऐजुकेशन (शिक्षा में गुणवत्ता)' प्रयास का नेतृत्व कर रही थीं। उन्होंने गुड़गाँव के शिक्षान्तर स्कूल में भी पढ़ाया है जो शिक्षा में श्री अरविन्द के दर्शन पर आधारित एक प्रगतिशील स्कूल है। वे अपना समय एक शोधकर्ता, उद्यमी तथा पालक की भूमिकाएँ निभाने में व्यतीत करती हैं। उनसे yamini.jha.7@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। __अनुवाद :__ सत्येन्द्र त्रिपाठी